National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2015; 1(1): 13-14
© 2015 NJHSR
www.sanskritarticle.com
Received: 30-07-2015
Accepted: 02-08-2015

डॉ. नारायण
सहायक आचार्य,हिन्दी विभाग,
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
तिरूपति-517502 आन्ध्रा प्रदेश

Correspondence:
डॉ. नारायण
सहायक आचार्य,हिन्दी विभाग,
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
तिरूपति-517502 आन्ध्रा प्रदेश

वैश्वीकरण के युग में तेलुगु भाषा की भूमिका

डॉ. नारायण

भारत एक बहुभाषी देश है इस देश में मात्रृभाषा के रूप में 1652 से अधिक भाषाएं बोली जाती है। ये भाषाएं किसी एक परिवार की न होकर विभिन्न परिवारों से संबन्धित है। मुख्य रूप से ये चार भिन्न परिवारों के सदस्य के रूप में भारत में बोली जाती है। आर्य कुल, द्रविड़ कुल,आस्ट्रिक कुल, भोट-बर्मा कुल अन्य चार भाषाई कुलों में दो परिवार (आर्य और द्रविड) अपनी आबादी में कुल जनसंख्या का 97.4 प्रतिशत है। भहु संख्या में बोली और समझी जाने वाली मात्रृभाषा के अतिरिक्त संप्रेषण व्यवस्था के न टूटने का एक प्रमुख कारण यही है कि भारत में संपर्क भाषा के रूप में सिद्ध भाषाओं की एक अटूट श्रृंखला है। जो एक ओर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रयोजनसिद्ध भाषाएं कहीं जा सकती है। और किसी एक भाषा समाज के स्वीकृत सामाजिक संस्थानों में संबंध स्थापन के लिए कार्य सिद्ध भाषाएं भी मानी जा सकती है। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश की राजभाषा के रूप में स्वीकृति तेलुगु भाषा की स्थिति को देखने पर प्रतीत होता है कि इस भाषा की जनसंख्या हिन्दी के बाद, भारत की दूसरी सबसे बड़ी भाषा मानी जाती है। भाषा के रूप में तेलुगु अपने भाषाई समाज को एक सुत्रता में बांधने का कार्य करती है, पर इसके साथ यह भी देखा जा सकता है कि तेलुगु भाषी आंध्र प्रदेश के निकटवर्ती राज्यों में भी काफी फैले हुए हैं। उदाहरण के लिए सीमावर्ती राज्यों - तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र और उडीसा में जिस अनुपात में ये बिखरे-फैले है सीमावर्ती राज्यों के अतिरिक्त बंगाल,मध्य प्रदेश, केरला, बिहार, आसाम, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर, जिस प्रकार तेलुगु इन राज्यों में बोली जाती है। उसी प्रकार आंध्र प्रदेश में तेलुगु के अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू, गुजराती, मलयालम, पंजाबी, बंगाली आदि भाषा प्रमुख मानी जाती है।

विश्व के कयी देशो में तेलुगु भाषा फैली हुई है। जैसे मलेशिया, सिंगापूर, इंडोनेशिया, इन लोगांे में से कुछ अध्यापकों, कार्य कर रहे हैं तो कुछ सरकारी कर्मचारी, डॉक्टर, स्वणकार, राजनेता आदि के रूप में कार्यरत है। मलेशिया में व्यापारियों, को सरकार को भी कर्ज देने वाला आर्थिक व्यवस्था के प्रमुख माने जाने वाले चेट्टीयार आज तमीलियन कहलाते हुए भी पहले तेलुगु प्रांत से संबंधित लोग ही है। दक्षिण प्रांत में चेट्टीयार के घरों में आज भी तेलुगु भाषाओं का प्रयोग होता है। आज मलेशिया में निवास करने वाले दक्षिण भारतीयों में तेलुगु बोलने वालो की संख्या तृतीय स्थान पर है। (4 %) मारिशस द्वीप में लग-भग 5600 लोग तेलुगु बोलने वाले है। वहा की पाठशालाओं से लेकर उच्च शिक्षा तक तेलुगु पढाई जाती है। इसी प्रकार विश्व में सभी बडे देशों में अल्प संख्याा में क्यों न हो प्रतिष्ठीत पद पर कार्यरत है। खास तौर पर आज विज्ञान शास्त्रवेत्ता के रूप में डॉक्टर के रूप में इन्जीनीयत आदि विशेष रूप से इंगलैंड में युनाईटेड स्टेट आफ अमेरिका में, रस्या में, कुछ विश्वविद्यालयों में तेलुगु भाषा अपना स्थान ग्रहण कर चुकी है। अमेरिका में, रस्यों की प्रमुख ग्रंथालयों में आन्ध्र प्रांत में साधारण नगरों में प्राप्त न होने वाली भहुमूल्य ग्रंथों को भी संकलीतकर रखा गया है। न्यूयार्क, चिकागों आदि बड़े शहरों में महासभा अयोजित जाती है। तेलुगु के साल में मनायी जाने वाली संक्रान्ती श्रीराम नवमी आदि त्योहारों को तेलुगु भाषी के लोग विदेशों में मनाते है। भारत देश में अंग्रेजी के शासन के समय में भी सर्वेपल्ली राधाकृष्ण विद्वान अक्सफर्ड विश्वविद्यालय जैसे विश्व विख्याात संस्था में सर्व प्रथम स्थान को प्राप्त कर हिन्दू धर्म को पढाया था। आज आन्ध्र प्रदेश में चलाई जाने वाली संस्कृति के फलस्वरूप महामेधावी महान नायकों महान कलाकारों, विज्ञान पंडितों, धर्म प्रचारकों, पाश्चात्य देशों की यात्रा कर आन्ध्र संस्कृति एंव भाषा में व्यापकता ला रहे है। इन लोगों में हिन्दू-मुसलमान, इसाईयों के साथ- साथ और सभी धर्म के सभी प्रांतों के लोग भी शामिल है। संत साधुओं द्वारा उपलब्ध होने वाली भगवतवाणी को सुनने के लिए, पुराण क्षेत्रों के दर्शन कर धन्य होने के लिए विदेशों से आन्ध्र प्रदेश की यात्रा कर यहाँ के धर्म साधना केंद्रों से आकर्शित हो रहे है। आन्ध्र प्रदेश के तेलुगु भाषी के कलाकार लोग विदेशों की यात्रा कर कूचिपूडि नृत्य जैसी कलाओं को प्रदर्शित कर रहे है। हाल में ही आन्ध्र प्रदेश की सभा में प्रस्तुत किया गया एक भाषण में बहुत दूर अट्ठतः फिजि द्विप में निवास करने वाले तेलुगु भाषी लोग अधिक संख्या में श्री सत्य सॉई बाबा के शिष्यों के रूप माने गये है। इस प्रकार के विषयों पर विचार करते समय हमें प्रतीत होता है कि आन्ध्र प्रदेश कि प्राचीन युग में भारत की संस्कृति को और आन्ध्र की संस्कृति को जिस प्रकार विस्तरित रूप देखने को मिलता है उसी प्रकार आज वैश्वीकरण के इस युग में विश्व भर में आन्ध्रा भाषा एंव संस्कृति को पूनर्जीवत होते हुए प्रतीत होती है।

तेलुगु अनुवाद के इतिहास की चर्चा में हम पाते है कि तेलुगु लिखित साहित्य अनुवाद से ही आरंभ होता हे। 11 वीं शताब्दी में नन्नया महाभारत के अनुवाद से तेलुगु के लिखित साहित्य की नीव डालते है, इसके उपरांत 13 वीं शताब्दी में प्रवेश होने वाला रंगनाथा रामायण, केतन द्वारा किया गया धशकुमार चरित्र अनुवाद, एर्ना द्वारा हरिवंश अनुवाद् 14 वीं शताब्दी में बम्मेरा पोतना द्वारा अनुवादित भग्वतपुराण

चन्द्रोदय, बराहपुराण आदि ऐसे अनेक अनुवाद है इस के बाद आने वाला प्रबंध युग है यह युग तेलुगु साहित्य के इतिहास में स्वर्ण युग माना जाता है। कवित्रय के काल से, लेकर कृष्णदेवराय के काल तक तेलुगु में अनेक साहित्य विधाओं का अनुवाद देखने को मिलते है, आधुनिक काल में प्रमुख तेलुगु अनुवाद रवींद्रनाथ टागूर कि (गीतांजली, पोस्टाफीस, गृहप्रवेश, मालिनी) आदि रचनाओं का अनुवाद है, सी.पी. ब्रौउन द्वारा वेमन्ना के पदों का अनुवाद, मेघ संदेश, गांधी चरित्र, इस प्रकार के अनुवाद निरंतर जारी हो रहे है। लेकिन पाश्चात्य देशों में अनुवाद पर की जाने वाली कोशिश या प्रयत्न से तुलना की जाये तो तेलुगु अनुवाद की कोशिश कम ही नजर आती है। अनुवाद की आवश्यकता को पहचाने वाले पाश्चात्य विद्वानों ने इस दिशा में एक साहित्य अनुवाद को ही नहीं बल्कि कई देशों के विज्ञान, संस्कृति आदि सभी को प्राप्त किया है।

इस प्रकार प्रारंभ होने वाला अनुवाद आधुनिक युग तक पहुँचकर यह "अनुवाद युग"(Jumpell, 1961) या पुनरूत्पत्ति युग (Benjamin, 1923) ऐसा कहा जाने के स्तर पर पहूँच गया है इतना ही नहीं बल्कि और एक पग आगे दिखाई देता है अब यंत्रानुवाद युग जारी है। आज हर जगह हमें सुनाई देनेवाले शब्द वैश्वीकरण (Globalisation), Internationalisation या Globe Village (विश्व ग्राम) Globalisation का अर्थ वैश्वीकरण या अंतर्जातीय एकता होता है। इस प्रकार जाती, भाषा, संस्कृति, धर्म, राजनीती आर्थिक नेपत्य से उभरे विश्व में रकहने वाले सभी लोगों का एक ही समाज जैसा किया जाने वाला प्रयत्न ही वैश्वीकरण, वैश्वीकरण में भाषाओं का अनुवाद प्रमुख पात्र है, ऐसा कहने में कोई संदेह नहीं होगा।

विश्व ग्राम के रूप में देखा जाने वाला यह आधुनिक युग में अनुवाद का पात्र बहुत ही प्रमुख है। विश्व की सभी भाषाओं, संस्कृतियों, विज्ञान शास्त्रों आदि सभी को एक बनाने वाली शक्ति अनुवाद को मात्र प्राप्त है। अनुवाद के द्वारा विश्व में निहित शास्त्र, संस्कृति, विज्ञान, खेल, विनोद सभी मानव के लिए अपनी हाती है। आधुनिक नागरिक विश्व में अनुवाद एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में विधमान है। विश्व की सभी भाषाओं की विशिष्ठता अपनी अपनी होती है। भिन्न-भिन्न भाषाओं से संपन्न सभी देशों को मंच पर लाकर Globe Villageका रूप देना हो तो अनुवाद की आवश्यकता अवश्य होगी। अनुवाद की विशिष्ठताओं को पहचानकर ही आज अमेरिका, रूस, फ्रान्स, जर्मनी, चीन, जापान जैसे देशों में सौ से अधिक अनुवाद संस्थाएं उभरकर तेजी से कार्य करते हुए अनुवाद विश्व के प्रमुख क्षेत्रों में एक सा माना जाता है। अनुवाद द्वारा विश्व के शास्त्र, संस्कृति, विज्ञान, खेल कूद, विनोद आदि जानव के लिए संयुक्त कमायी होगी।

एक्या राज्य समिति के द्वारा 2008 वर्ष को विश्व भाषा दिवस के रूप में माना गया था जो क्षीण दशा में है उसकी संरक्षण के लिए प्रयास करती है। मात्र भाषा दिवस मनाते समय तेलुगु भाषा की मान्यता प्रदान करने के लिए कोशिश जारी है। अमेरिका की विश्वविद्यालय में, मोरिशश, मलेशिया, सिंगापूर, फीजि आदि देशों में तेलुगु भाषा का पाठ्यक्रम पढाया जाना तेलुगु भाषा की उन्नति के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों का ही हिस्सा माना जाता है। इस प्रकार के प्रयत्नों से संतुष्ट न होकर तेलुगु भाषा विकास के लिए, भाषा के व्यापक रूप के लिए, अनुवाद की बहुत ही आवश्यकता होती है। यह दो प्रकार के अनुवाद होने की आवश्यकता है। प्रथम तेलुगु से अन्य भाषाओं का अनुवाद करना होगा।

आज वैश्वीकरण के इस दौर में विश्व में चारों और से पधारे समकालीन विज्ञान को व्यापकता लाने प्रयास में पत्रकारिता से बढकर और कोई साधन नहीं हो सकता है। आज तेलुगु दैनिक पत्रिकाओं में, रेडियों के समाचारों में दृष्टि मान होने वाले नये शब्दों, एंव वाक्यों को परखने पर नये नये शब्दों से भरे वाक्या दिखाई देते है। वास्तव में समाचार अंग्रेजी भाषा में होता है, समाचार के उस विषय को कुछ ही समय में तेलुगु अनुवाद करके भेजा जाता है। इतनी कम अवधी में तनाव तनाव से रहने वाले समाचार पत्र के लेखक की भाषा में निश्चित रूप से नये शब्दों का जन्म होता है। उदाहरण के लिए नये भावों को तेलुगु भाषा बोलने वाले लोगों की सोच पद्धती में समय होने पर भी जो भाषा है उसे यथा-तथ्य उसके उसके समानार्थ लिख देना ही Idiomatic Translation कहा जाता है जैसे दोंगासरकु (Smuggled Goods),दोंगाव्यापारमु (Smuggling Black Marketing), गीट्टुबाटुधरा (Fair Price), नष्टपरिहारमु (Compensation), पोदुपुमोत्तालु (Saving)।जैसे ऊपर बताया गया की श्रृष्टि की गयी बातों को स्वीकार कर के यथा-तथा अनुवाद कर देना, इस प्रकार चीन, जर्मनी, भाषाओं में अधिक हो गया है। अंग्रेजी में बहुत सलेभ (Latin omnipotens = Almighty, यह भाव अंग्रेजी भाषा के लिए सहज है। अंग्रेजी भाषा पर अधिकार रखने वालों को ही ऐसी बातें क्या समझ में आयेगी ऐसा प्रश्न हमारे मन में उत्पन्न होने लगता है।

जैसे प्रांतिया वार्ता, राष्ट्रसमाचार लेखा, कुटम्भनियंत्रण कार्यक्रम, आहार मंडलमु, अभ्यांतरविषयालु प्रचुरणाचट्टम, अंर्तजातीय शान्ति भद्रता, विकेन्द्रिकरण, इस प्रकार के पद से अधिक है।

अंग्रेजी के वाक्यों को तेलुगु लिखा जाता है। (Actual loan &Words) अपिलु, कफ्यु, प्रोरोग चेयु, आदि इस प्रकार शिक्षित लोगों की भाषा में अधिक पत्रकारिता की भाषा में कम दिखाई देता है।

वैश्वीकरण के इस युग में हमारे सामने सबसे बडा प्रश्न है कि जैसे उपर्युक्त बताई गयी पद्धती के अनुसार उत्पन्न होने वाली बातों को बिठाया गये वाक्यों के अर्थ अंग्रेजी अर्थ को तेलुगु में किस प्रकार डोस रहा है, इस प्रकार सोचा जाये तो सामान्य रूप से तेलुगु में न होने वाली सोच की पद्धति - एक नया Conceptual Frame Work पत्रकारिता के भाषा द्वारा तेलुगु में प्रवेश होता है। सामान्य रूप से क्या तेलुगु वाले इस प्रकार समझ रखते है, सोचते है, उन्हें तुरंत ही क्या इन वाक्यों के अर्थ प्रेरित करते है। इस प्रकार समझी जाने वाली कर्द बातें आज के पत्रकारिता की भाषा में दिख पडते है।

वैश्वीकरण के इस युग में तेलुगु भाषा का प्रयोग अंर्तजाल में बडे पैमाने पर हो रहा है। तेलुगु में वेब सैट खोले जा रहे है। आंन्ध्र प्रदेश में कमप्यूटर में तेलुगु के माध्यम से टंकण किया जाता है। आज आंन्ध्र प्रदेश में इ-सेवा, मी-सेवा, की सुविधा तेलुगु माध्यम से ही उपलब्ध है। जिस से Caste Certificate, Registration, Aadhaar Card आदि एक ही पल में उपलब्ध होते है। इस प्रकार वैश्वीकरण के इस दौर में तेलुगु भाषा की भूमिका अस्मणीय है।